सप्तमी अध्याय

उत्तर प्रदेश के कानपुर (देहात) जनपद का सामाजिक आर्थिक परिवेश

☐ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
☐ आधारभूत परिचयात्मक तथ्य
☐ औद्योगिक विकास
☐ जनपद के बाल श्रमिकों की स्थिति पर एक सर्वेक्षण (स्केल नं.-1)
"कानपुर देहात (संग्रा यमुना के मध्य दोआब के निचले भाग में स्थित) कानपुर मण्डल का भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यह जनपद एक कृषि प्रधान जनपद है। यह 25° 26' से 26° 58' उत्तरी अक्षांश तथा 79° 43' पूर्वी देशान्तर रेखा के बीच बसा है। कानपुर महानगर से बाँटा होने के कारण यहाँ विकास की काफी समस्याव्यास है। जनपद की सीमाओं प्रदेश के 5 जनपदों कानपुर नगर, कननीज, ऑंरेया, जालौन व हमीरपुर से मिली हुई है। जनपद के पूर्व में कानपुर नगर, उत्तर परिसर में कननीज, पश्चिम में ऑंरेया, दक्षिण में जालौन व हमीरपुर स्थित हैं। दक्षिण में यमुना नदी प्राकृतिक रूप से जनपद की सीमा को जनपद जालौन व हमीरपुर से अलग करती है।

जनपद कानपुर की बड़ी जनसंख्या, महानगर की समस्याओं की जटिलता, समीपस्थ देहात क्षेत्रों के पिछड़ोपन व भौगोलिक रूप से जनपद के प्रशासनिक नियंत्रण का केन्द्र जनपद के एक छोर से स्थित होने के कारण ग्रामीण क्षेत्र के त्वरित विकास को दृष्टिगत रखते हुये 9 जून 1976 को कानपुर जनपद का विभाजन करते हुये 'कानपुर देहात' जनपद का सृजन किया गया। लेकिन प्रशासनिक असुविधाओं के कारण कुछ समय बाद ही पुन: 12 जुलाई 1977 को इस विभाजन को रद्द करते हुए कानपुर नगर व देहात का एकीकरण कर दिया गया। लेकिन पुन: 25 अप्रैल 1981 को कानपुर जनपद को 'कानपुर नगर' एवं 'कानपुर देहात' जनपदों में विभक्त करते हुये प्रशासनिक दृष्टिकोण से कानपुर नगर में एक तहसील (कानपुर सदर) व तीन विकास खण्ड (कल्याणपुर, सरसोल व विधुत) एवं कानपुर देहात में 5 तहसीलें (बिल्हीर, घाटमपुर, भोगीनपुर, डेसाँपुर व अकबरपुर) तथा 17 विकास खण्ड रखे गये।

इसी वीं बीच 1988 में रसूलाबाद (1894 में दूरी) तहसील के सृजन से जनपद में 6 तहसीलें हो गयीं। 1977 में जनपद की दो तहसीलें घाटमपुर व बिल्हीर कानपुर नगर में मिला देने तथा सितम्बर 1997 में तहसील सिकन्दरा (1861 में दूरी) के सृजन से वर्तमान में अब जनपद में 5 तहसीलें व 10 विकास खण्ड हैं।

(159)
2001 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 15 लाख 84 हजार, 37 (प्रामाण्य 14,76,662 व शहरी 1,07,375) है व साक्षरता दर 66.59 प्रतिशत है।

भौगोलिक क्षेत्रफल 3142.88 वर्ग किलोमीटर में फैले इस जनपद की जलवायु गर्म-मानसूनी है। यहाँ का औसत तापमान 6° से 43° के बीच रहता है तथा वार्षिक औसत वर्षा 940 मिलीमीटर है। जनपद में ईशान नदी (16 किमी.), दक्षिण नोन (26 किमी.), उत्तर नोन (55 किमी.), संगुर (83 किमी.), पाण्डु (30 किमी.), रिन्द नदी (115 किमी.) प्रवाहित हैं।

जबकि पूरी दक्षिणी सीमा में यमुना नदी प्रवाहित है जिससे अमरावती ग्राम केनार निकाल कर बीड़ क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराई गयी है। जिले में पानी के बहाव का ढाल पश्चिमोत्तर से दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसी दिशा में यहाँ की मुख्य नदियों का बहाव है। यह समस्त भू-भाग नदियों की लाई हुई मिट्टी के विभाजन से बना है।

जनपद देश के अन्य भागों से रेल तथा सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जनपद में उत्तर रेलवे व मध्य रेलवे दो प्रकार के रेल मार्ग हैं। उत्तर रेलवे की प्रमुख विदुर्दीकृत रेलवे लाइन दिल्ली-हावड़ा जनपद के मध्य से गुजरती है। जिस पर बैंक, रुरा, झाड़क प्रमुख स्टेशन है। मध्य रेलवे की कानपुर-शॉरी-मुख्त रेलवे लाइन पर पामा, लालपुर, मलासा, पुखरायी और प्रमुख स्टेशन है। मुख्यालय से एक ओर ग. रे. का स्टेशन लालपुर 3 किमी. पर तथा दूसरी ओर उ. रे. का स्टेशन रुरा 13 किमी. पर स्थित है। जनपद मुख्यालय के विकास के दृष्टिकोण से लालपुर व रुरा स्टेशनों को प्रमुख स्टेशनों के रूप में विकसित किए जाने हेतु क्षेत्रीय जनता की मांग विचाराधीन है।

जनपद मुख्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग 25 (कानपुर-आगरा-शॉरी मार्ग) जिसे कालपी रोड के नाम से जाना जाता है पर कानपुर नगर से 40 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। कालपी रोड के जलिये जनपद सीमे कानपुर नगर व शॉरी से जुड़ा है। एक दूसरा राष्ट्रीय राजमार्ग (मुगल रोड) भोगोनीपुर-सिकंदराबाद से उरी, इटावा होते हुए आगरा तक जाता है। प्राचीन

1. कानपुर वेला - अतीत से वर्तमान तक जिला सूचना कार्यालय, कानपुर (देहात) द्वारा प्रकाशित

(160)
मुगल रोड (प्रमुख के समानांतर) सबसे प्रसिद्ध मध्यकालीन राज-पथ था जो आगरा व दिल्ली को इलाहाबाद-पटना से मिलाता था। इसके किनारे घाटमपुर, मूसानगर, चपराघटा, भोगनीपुर, जेटपुर, सिकन्दरा, खयाजा-पूरल आदि प्राचीन कस्बे और मंदिरां थीं। बीच-बीच में बनकर गुल, सरस्य, कुएं और दीवार सब सब बने हुए थे। काफी चौड़ी, चौड़ी सड़क पर पुराने बूढ़े लगे थे। शहरों में यह दरार निर्मित था। यह अन्यत्र राज-पथ था। बौद्ध-काल से इसका इतिहास मिलता है। यहीं उस समय का सबसे प्रसिद्ध राज-पथ था। इसी को कह्से-कहसे पर घुमाकर और ब्राह्मण नगरों को मिलाकर लार्ड डलहोल्डी ने ग्रांट-ट्रक रोड का निर्माण कराया था।

अब यह सड़क विश्व बैंक परियोजना के तहत भोगनीपुर से चौड़गरा (फरोहपुर) तक चौड़ा व सुदृढ़ किया जा रहा है जिससे इलाहाबाद, आगरा, जोशी की ओर आने-जाने वाले वाहन जिन्हें कानपुर नहीं जाना है यहाँ से जुटाव कर 40 किलोमीटर रास्ता बचा सकते हैं।

तहसील क्षेत्र अकबरपुर व रसुलाबाद के अंतर्गत एक अन्य प्रमुख मार्ग (बेला-बिवूरा) जनपद को जी. टी. रोड पर चौबेपुर (कानपुर नगर) व दूसरे छोर पर ओंटेयर से जोड़ता है।

जनपद के आबाद 970 ग्रामों को ब्रांच सुविधा मुहीया कराने हेतु 178 ड्राक केन्द्र व 33 तार केन्द्र हैं जिनमें 8 ड्राक केन्द्र व 7 तार पर जनपद के नगरीय क्षेत्रों में स्थित हैं।

दूरसंचार के दृष्टिकोण से जनपद में 28 टेलीफोन एक्सचेज हैं तथा लगभग 3647 टेलीफोन कनेक्शन हैं। इसके अतिरिक्त पूरे जनपद में 87, एस. एन. एल. व कुछ क्षेत्रों में हच व रिलायन्स मोबाइल की सुविधा उपलब्ध है।

जनपद की अधिसंख्य जनता कृषि पर आधारित है। कृषि के अतिरिक्त कुटीर उद्योग के रूप में मूसानगर, अमरशा में रंगाई का काम, सिकन्दरा में देशी कम्बलों, डेलहपुर में तरी, मूसानगर में लोहे की कढ़ाई, पुखराज में ताल्ले व बर्तन, रसाहन, मूसानगर, अमरशा में नककारी व नमारी लकड़ी, भोगनीपुर, रसुलाबाद व संदलपुर में चमड़े तथा अन्य क्षेत्रों में
टोकरी, रस्सी व कुम्हारी का काम प्रमुख रूप से होता है। इसके साथ ही ग्रामों में दुध व्यवसाय की ओर लोगों की रुचि काफी बढ़ी है। हाल के वर्षों में आधुनिककरण के कारण रनियाँ, जैनपुर व पुखरायें में बहुत से बड़े उद्योग स्थापित हुये हैं।

जनसंख्या दबाव को कम करने में सहायक होगा। UPSIDC द्वारा जैनपुर में आवासीय क्षेत्र विकसित किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गंगा और यमुना दोआब में स्थित कानपुर वेदायात (सर्वांग क्रांत नगर) में पुरातात्त्विक महत्त्व के अति प्राचीन अवशेष बिखरे पड़े हैं। अकबर की शासन व्यवस्था का विस्तृत वर्णन अपने फजल के ग्रन्थ 'आइने अकबरी' में मिलता है। कानपुर के दक्षिण भाग मूसानगर, चपरपटा, भोगनीपुर, सिकंदरा आदि स्थानों को मिलाती हुई सड़क 'मुगल रोड' के नाम से प्रसिद्ध है।' मुगलकाल में जिले का दक्षिणी भाग भाग गुरुवार केन्द्र में था। यमुना के किनारे ख्वाजा फूल में पत्थर का काफी बीड़ा और मजबूत कोट था। अब फाटक व कोट ध्वस्त अवशेष में है तथा यहाँ से कुछ दूर यमुना किनारे पर बिलासपुर अपने नाम से परिवर्तन का सदर मुकाम था। इसके उद्धन में सिकंदरा की प्रगति हुई। जिसका एक कारण सिकंदरा का जी. टी. रोड पर रिहाया था।

1713 में बिलासपुर के पास स्थित अमरगढ़ पर मराठों ने अधिकार कर लिया था। यहाँ से आगे पत्थरा नामक स्थान, जहाँ पुराती गड्ढे के ध्वंसाशेष मिलते हैं, का नाम बदलकर इस्माइल नगर रख दिया गया था। यहाँ से कुछ दूर पर 'किशनपुर की गड्ढे' स्थित है जिसमें पास ही में जन आबादी का केन्द्र प्रसिद्ध 'काल्याणी देवी' का मंदिर है। इसी के आगे दिशे, टेंजैगा गड्ढे से दो मील पर शाहपुर का प्राचीन ऐतिहासिक स्थान था। यहाँ की पत्थर की गड्ढों के पत्थरों को कालीपी रेलवे पुल में प्रयुक्त किया गया। मुगलकाल में शाहपुर एक परगनों का

1. कानपुर देहात – अतीत से धर्मांश तक, पृ. 9
सदर मुकाम था। शाहपुर के पास उदईपुर व करियापुर में भी गढ़ीया थी। 'चौड़ा' मुस्लिमों का पवित्र स्थान है। इसके आगे दोलतपुर, रसूलपुर, नगवा, देवरहट में गढ़ीया व चपरघटा में ऐतिहासिक किला था। मध्यकाल में शिवली, औजहाँ, रसूलाबाद, बार-चहिजरी, बनीपास, औजाज, पड़री लालपुर, देरापुर आदि स्थानों पर भी गढ़ीया था।

जनपद के अमृतधा, भोगनीपुर, मुखरायाँ, मूसानगर, चपरघटा, गजनेर, बारा, सरकनखेड़ा, खाजा फूल, सिकन्दराबाद, देराजपुर, कासीपुर, रुरा, कैथा और शिवली ऐसे स्थल हैं जो इतिहास के अनोखे और दुर्लभ तथ्य अपने आगोश में समेटे हैं।

जनपद की 'अकबरपुर' तहसील एक ऐतिहासिक नगर है। प्राचीनकाल में यह एक बहुत सुंदर कस्बा था। मुगल सम्राट के अकबर के रिसालदार कूंवर सिंह ने इस कस्बे का निर्माण किया था। माण्टगुम्ही की कानपुर पर लिखी गयी रिपोर्ट में इसका 'गुड़ई खेतर' नाम दिया गया था। जिसे बदलकर कूंवर सिंह ने अकबरपुर कर दिया था। यह नगर मंदिरों व प्राचीन इमारतों का नगर है। एक भव्यता का नमूना है। यहाँ 160 फीट लम्बा और 70 फीट चौड़ा 'कलारन तालाब' है।

इस जनपद में अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं। अकबरपुर में मुगलकालीन 'शुकल तालाब' है जो न केवल 1857 में क्रांतिकारियों की शहादत से जुड़ा है वर्तमान काल की ऐतिहासिक इमारत वास्तुकला का अंदूभुक्त नमूना है और हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल प्रस्तुत करता है। शिवली-रसूलाबाद मार्ग पर औजहाँ में इन्द्रागाँधी वन चैतन्य एवं मनोरंजन केन्द्र भी वृद्धि है।

यमुना के किनारे मुगल रोड पर स्थित माँ 'भुज्ज देवी का मंदिर' त्रेतायुग से अपने आगोश में इतिहास को समेटे है। राजाबाली ने यहाँ अच्छे मध्य यज्ञ किया था। यही पास में 'देव्याली सरोवर' भी है। यमुना नदी के बीहड़ के उत्तरी क्षेत्र में शाहजहाँ गाँव को पास कथारी
गाँव थे काल्याणी देवी का मंदिर है। रूसा से 9 किमी। दूर वनजीवारा में 'वाणेश्वर महादेव' का ऐतिहासिक मंदिर है। रूसा शिवली मार्ग पर ही रिन्दी नदी की तलहटी में 'बरहल देवी' का सिद्ध मंदिर है तथा भागल नदी के मुहाने पर शिवली कस्बे के बाहर 'जागेश्वर मंदिर' है जो अति प्राचीन है। देशापुर तहसील मुख्यालय से लगभग 2 किमी। दूर संग्रूह नदी के किनारे जन आश्रय का केंद्र शापालेश्वर मंदिर स्थित है। रसूलाबाद कस्बे में स्थित प्रताप भाग नामक मंदिर हिन्दू-मुस्लिम एकता का अनुदान उदाहरण है। तहसील रसूलाबाद स्थित परसीरा गाँव के परसुराम की मन्दिर थी की रूप में जाना जाता है। यहाँ से 3 किमी। दूर जमदर खंडा में जमदानी आश्रम है।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम रान 1857 में बिदूर के नाना साहब, तात्या टोपे, बिरूडिया कृषिलाल प्रसाद, अतींदुला खान, रानी ज़ासील लक्ष्मीबाई में साथ ऐसे जनपद के रणताकुरों ने भी अपना योगदान दिया। इनमें सिक्कन्दरा के गोसाई बंदु के वंशज नगर काहिजरी के राजा दरियाब चंद्र, लक्ष्मीबाई के सहचरियों अजितबाई, रायेढी के राजा हिन्दू सिंह के पोत्र दुर्गा प्रसाद, शाहपुर की रानी, बानपुर के राजा रजत सिंह, रसूलाबाद के जरिमारा आदि के बलिदानों की गौरव गाथा 1857 की क्रांति से जुड़ी है।' जून 1857 में कानपुर पर नाना साहब की विजय तथा 17 अगस्त को कानपुर में बिदूर तथा 10 नवम्बर से 29 नवम्बर तक ज़ासी में पाण्डु नदी की घाटी की लड़ाई में कालमिंडी रौड से इस जनपद के अकबरपुर, सिक्कन्दरा, देशापुर, राजपुर, भोगनीपुर, शिवली, रसूलाबाद क्षेत्र के हजारों लोग इस संग्राम अंदेशों से जुड़कर हुये वीरगति को प्राप्त हुये। तात्या टोपे की सेना की निराकार जंग अकबरपुर से प्रारम्भ होकर भौतिक में समाप्त हुई जहाँ केमंबल को हार का सामना करना पड़ा।

शाहपुर की रानी ने भी इस क्रांति में नाना साहब के साथ खुली अदालत में अकबरपुर में शुकला तालाब बासखरी में मीत की राजा सुनाई गई।

1. मनोजदार, चौधरी, वंश : भारत का वृहत ऐतिहासिक, मैक्सिमिलिया लिं, जयपुर
आधारभूत परिचयात्मक तथ्य

कानपुर देहात (वर्तमान राजाबाई नगर) का क्षेत्रफल 3142.88 वर्ग किलोमीटर है।
2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 1584037 है जिसमें 73077 महिलायें व 853566 पुरुष है। यहाँ पर अधिकतर ग्रामीण परिवेश है ग्रामीण जनसंख्या 1476662 है।
स्त्री-पुरुष अनुपात 856-1000 है।' इस जनपद में छह तहसीलें हैं — अकबरपुर, भोगनीपुर,
सिकन्दरा, डेरापुर एवं रसूलाबाद। विकास खण्ड दस है — अकबरपुर, सरवरनखेड़ा, मैथा,
डेरापुर, झौज़ार, सदलपुर, राजपुर, अमरीपुर, मलासा, रसूलाबाद। निम्नांकित सारिणी जनपद के
स्तर से सम्बन्धित तथ्यों को स्पष्ट करती है।

1. प्राथमिक जनगणनासार, यो॰-11, जनगणना निदेशालय, उ. प्र.
### सारणी - 7.1

जनपद कानपुर देहात एक नजर में

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. सं.</th>
<th>विषय</th>
<th>तथ्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>क्षेत्रफल</td>
<td>3142.88 वर्ग किलोमीटर</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>जनसंख्या</td>
<td>1584037 (2001 की जनगणना के आधार पर)</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>जनसंख्या</td>
<td>महिलाएं (730771), पुरुष (853566)</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>ग्रामीण जनसंख्या</td>
<td>1476662</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>जनसंख्या में दरअसली वृद्धि दर</td>
<td>21.55 प्रतिशत</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>स्त्री पुरुष अनुपात</td>
<td>856—1000</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>जनसंख्या घनत्व</td>
<td>504 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>साक्षरता</td>
<td>66.59 प्रतिशत</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>साक्षर पुरुषों की संख्या</td>
<td>546188</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>साक्षर स्त्रियों की संख्या</td>
<td>328155</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>तहसीलों की संख्या</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>विकास खण्डों की संख्या</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>न्याय पंचायतों की संख्या</td>
<td>102</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>नगर पालिका परिषद</td>
<td>1 (पुखरायी)</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>नगर पंचायतों की संख्या</td>
<td>8 (अकबरपुर, रूपरा, शिवली, सिकन्दराबाद, अमरोहा, जीजाक) (डेरापुर, रसूलाबाद, 2001 में घोषित)</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>ग्राम पंचायतों की संख्या</td>
<td>613 (र्याय पंचायत-102)</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>ग्रामों की संख्या</td>
<td>971 (पंचायत घर-373)</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>राजस्थान ग्राम</td>
<td>1032 (ग्राम पंचायत सदस्य-7609)</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>आबाद ग्रामों की संख्या</td>
<td>1032 (क्षेत्र पंचायत सदस्य - 683)</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>गैर आबाद</td>
<td>62 (जिला पंचायत सदस्य-27)</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>आबाद आवासीय मकानों की संख्या</td>
<td>202498 (स्थानीय निकाय वार्ड-90)</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>प्रमुख फसलें</td>
<td>गेहूँ, धान, चना, तिल, दहलन</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>जाकरधर</td>
<td>200 (तालाबधर-33)</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>सस्ते गले की दुकानें</td>
<td>666</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>शीतग्रह</td>
<td>6</td>
</tr>
</tbody>
</table>

1. कानपुर देहात - अतीत से वर्तमान तक, पृ. 193

(166)
### सारिणी – 7.2
#### जनसंख्या
(वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर)  

<table>
<thead>
<tr>
<th>तहसील का नाम</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>पुरुष</th>
<th>महिला</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बसुलबारेद</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>278127</td>
<td>150455</td>
</tr>
<tr>
<td>डेसपुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>221252</td>
<td>119357</td>
</tr>
<tr>
<td>अकबरपुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>423268</td>
<td>228281</td>
</tr>
<tr>
<td>भोगनीपुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>318083</td>
<td>170602</td>
</tr>
<tr>
<td>सिकन्दरा</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>235932</td>
<td>127804</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>योग</strong></td>
<td><strong>1476662</strong></td>
<td><strong>696499</strong></td>
<td><strong>680163</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>डीड़क (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>204406</td>
<td>10797</td>
</tr>
<tr>
<td>सिवली (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>7830</td>
<td>4137</td>
</tr>
<tr>
<td>फस (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>14381</td>
<td>7668</td>
</tr>
<tr>
<td>अकबरपुर (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>17368</td>
<td>9261</td>
</tr>
<tr>
<td>सिकन्दरा (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>10884</td>
<td>5806</td>
</tr>
<tr>
<td>अमरीका (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>8890</td>
<td>4768</td>
</tr>
<tr>
<td>पुर्यालो (नगर पालिका)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>19908</td>
<td>10583</td>
</tr>
<tr>
<td>मोसमंज</td>
<td>नगरीय</td>
<td>7708</td>
<td>4047</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>योग</strong></td>
<td><strong>107375</strong></td>
<td><strong>57067</strong></td>
<td><strong>50308</strong></td>
</tr>
<tr>
<td><strong>कुल योग</strong></td>
<td><strong>1584037</strong></td>
<td><strong>853566</strong></td>
<td><strong>730471</strong></td>
</tr>
</tbody>
</table>

1. प्राथमिक जनगणनानालार
जनपद में साक्षरता उन्नयन हेतु राष्ट्रीय व प्रदेशीय योजनाओं पर कार्य किया गया है। साक्षरता सम्बन्धी आंकड़े निम्नांकित हैं।

### सारणी – 7.3
#### साक्षरता

<table>
<thead>
<tr>
<th>योग</th>
<th>पुरुष</th>
<th>महिला</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>रसूलाबाद</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>1567511</td>
</tr>
<tr>
<td>देशापुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>122672</td>
</tr>
<tr>
<td>अकबरपुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>234718</td>
</tr>
<tr>
<td>भोगनीपुर</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>16455</td>
</tr>
<tr>
<td>सिकन्दरा</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>127329</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>योग</strong></td>
<td><strong>805625</strong></td>
<td><strong>506404</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>झींझक (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>14138</td>
</tr>
<tr>
<td>शिवली (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>5418</td>
</tr>
<tr>
<td>रुस्ता (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>10119</td>
</tr>
<tr>
<td>अकबरपुर (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>9868</td>
</tr>
<tr>
<td>सिकन्दरा (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>6290</td>
</tr>
<tr>
<td>अमृतगढ़ (टाउन एरिया)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>4274</td>
</tr>
<tr>
<td>पुखरागों (नगर पालिका)</td>
<td>नगरीय</td>
<td>13800</td>
</tr>
<tr>
<td>गोसगंज</td>
<td>नगरीय</td>
<td>4811</td>
</tr>
<tr>
<td><strong>योग</strong></td>
<td><strong>68718</strong></td>
<td><strong>39784</strong></td>
</tr>
<tr>
<td><strong>कुल योग</strong></td>
<td><strong>874343</strong></td>
<td><strong>546188</strong></td>
</tr>
</tbody>
</table>

### औद्योगिक विकास

जनपद के विकास में उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका है। जनपद स्थापना के सुरुआती वर्षों में यह क्षेत्र, औद्योगिक वृद्धि से एक पिछड़े क्षेत्र में गिना जाता था। 80 के दशक में कानपुर महानगर की बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण आदि समस्याओं से निजात दिलाने के उद्देश्य से कानपुर देशावत व रनियां व जेनपुर क्षेत्र के रूप में विकसित करते हुए उद्यमियों को अवस्थापना सम्बन्धी सुविधाओं दिलायी गयी जिससे आज इस क्षेत्र में काफी संख्या में बड़े व मध्यम अक्षरणों के उद्योग स्थापित हैं।

1. प्राथमिक जनगणना सार

(168)
कानपुर देहात जनपद नाम के अनुरूप विशुद्ध ग्रामीण परिवेश को प्रमुखता देने वाला जनपद है, जहाँ अभी भी बाजार, शिक्षा, चिकित्सा, आवागमन, मनोरंजन आदि सुविधाओं को विकसित किए जाने की आवश्यकता है। कृषि के बाद सामान्य लघु उद्योग सेक्टर ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ रोजगार उपलब्ध कराने की प्रभाव संभावनाएं हैं।

हमारे आसपास के गाँवों में जो उत्पादन होता है उसी के आधार पर उद्योग धारे विकसित किये जाएं ताकि ग्रामीण क्षेत्र का गजबपूर अपने खाली समय में अपने श्रम व समय का उपयोग कर भरपूर लाभ कमा सके।

वर्तमान में जनपद में 10 विकास खण्डों में से तीन विकास खण्डों सरकारीहेड़ (रनियां), अकबरपुर (जैनपुर) व अमरौढ़ (पुख्ताग-भोगनीपुर) को छोड़कर अन्य सभी विकास खण्ड लगभग उद्योग शून्य क्षेत्र में आते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम (एम. पी. एस. आई. डी. सी.) द्वारा जैनपुर (कानपुर से 38 किमी. पश्चिम) में कालपी रोड के दोनों ओर लगभग 295 एकड़ क्षेत्रफल में 260 भूखण्ड विकसित किए गए। साथ ही निगम द्वारा रनियां साइट N. 1 (10.52 एकड़ क्षेत्र में 47 भूखण्ड), साइट N. 2 (15.70 एकड़ क्षेत्र में 68 भूखण्ड) विकसित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त रनियां औद्योगिक स्थान 26.48 एकड़ क्षेत्रफल में 108 भूखण्डों का एक और औद्योगिक क्षेत्र विकसित है। जनपद में अंडक, रसूलाबाद, डेरापुर में भी निजी औद्योगिक स्थान विकसित किये गये थे जो अविकसित दशा में हैं।

रनियां औद्योगिक क्षेत्र में बलसारा, मैकड़बेल मिनरल वाटर, मोदी बांड एडेसिव, कानपुर एडब्लूम, मण्डोरा आयल, प्रॉफिटर स्ट्रिंग्स, करोना कास्पेटिक और जैनपुर औद्योगिक क्षेत्र में निर्माण, नेशनल, पेसी, सुप्रीम फॉर्मूलर्स जैसी बड़ी व प्रसिद्ध इकाइयों स्थापित हैं। जहाँ हजारों की संख्या में लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

1. कानपुर देहात – अतीत से वर्तमान तक
वर्तमान में जनपद क्षेत्र को प्लास्टिक सिटी के रूप में विकसित किये जाने की योजना प्रस्तावित है जहाँ दिबियापुर (गेल) से निकले प्लास्टिक रंग मैटरियल के उपयोग से जुड़ी इकाइयों स्थापित किये जाने की कार्य योजना है। इसके साथ ही माती के समीप जलालपुर गाँव में रिलायंस द्वारा 50 एकड़ क्षेत्र में ऑयल टर्मिनल बनाया जा रहा है जहाँ भूमिगत प्राइमर लाइन के अनुसार प्रतिदिन लगभग 3 हजार टन पेट्रोल उत्पाद भोपाल से उत्तर भारत में वितरण हेतु प्राप्त होगा। लगभग 400 करोड़ की योजना के वर्ष 2006 के अन्त तक पूरा होने का अनुमान है।

शीघ्र ही सिकंदरा-बारा-कानपुर मार्ग 4 लेन हो जाने से क्षेत्र में आयोगिक गतिविधियों को काफी बढ़ावा मिलेगा। कालपी रोड में रनियां और गक्षिगिक क्षेत्र के समीप स्थित मोटर कैबल व्यू, खनन मोटर व गू पी। टरिज्म का राही मोटर पर्यावरण व उद्यमियों को आकर्षित करने की सारी सुविधाएं दे रहे हैं। जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 80 इंट-ब्लटर आकाशवानी के अनुसार स्थापित हैं जिसमें से 30 के करीब केवल भोगनीपुर क्षेत्र में लगे हुए हैं।

ग्रामीण रोजगार की दृष्टि से गुड़ उत्पादन, अचार उद्योग, मधुमक्खी पालन, अचार उद्योग और रेशम उद्योग की इकाइयों भी स्थापित है जिनमें छहकड़ों लोगों को रोजगार मिला है।

कानपुर देहात जनपद सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। उसमें दलित और गरीब तब्बल की संख्या ज्यादा है। जनसंख्या का एक बड़ा भाग रोटी रोजी की तलाश में विभिन्न संगठित एवं असंगठित उद्योगों में काम करता है। औद्योगिक इकाइयों से आता हुआ है और सामाजिकता के उन्नती परिवारों से हासिल होने हैं जो गरीबी से दूर बाल श्रमिकों का प्रयोग करता है। उसमें एक बड़ी संख्या अनुसूचित जाति के मजदूरों की है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने 1988 की अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि भारत में रोटी रोजी के साधन के रूप में भारत में बाल श्रमिकों का प्रयोग प्रतिवर्ष मात्रा में होता है। इन बाल श्रमिकों पर अपने परिवार की जिम्मेदारी होती है और स्वयं की
आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ अपने पारिवारिक सदस्यों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन्हें अपने श्रम को अत्यावृत्त में ही कम दामों पर बेचना पड़ता है। कानपुर देहात जनपद में भी यही स्थिति है।

कानपुर देहात के बाल श्रमिकों की स्थिति पर एक सर्वेक्षण

इस जनपद में बालश्रम की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए इस जनपद के बाल श्रमिकों के उपर सर्वेक्षण के लिए एक मापन स्केल बनायी गयी। जिसे स्केल संख्या-1 के अन्तर्गत रखा गया है। इस प्रश्नावली में 35 प्रश्न है जो बच्चों की आयु, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा, सामाजिक स्तर, कार्य के घटने व परिस्थितियाँ, वेतन, मनोरंजन, आदतों व राजनीतिक जागरूकता तथा अपने अधिकारों की जागरूकता से सम्बन्धित हैं। इस स्केल के आधार पर विभिन्न संगठित एवं असंगठित उद्योगों में कार्यरत 50 बाल श्रमिकों से साक्षात्कार किया गया। जिसका सम्पूर्ण विश्लेषण निम्नांकित है।

सारणी - 7.4
आयु के सम्बन्ध में

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष अन्तराल</th>
<th>8-10</th>
<th>10-12</th>
<th>12-14</th>
<th>14+</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>15</td>
<td>20</td>
<td>10</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>30</td>
<td>40</td>
<td>20</td>
<td>10</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधाधीन ने विभिन्न स्थानों पर कार्यरत बाल श्रमिकों से साक्षात्कार किया। 50 बाल श्रमिकों से हुई बातचीत के द्वारा उनकी आयु समस्या जानकारी प्राप्त की गई। बाल श्रमिकों द्वारा बताई गई आयु के आधार पर उनको सारणीबद्ध किया गया। इसके द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये थे –

1. बाल श्रमिक के रूप में कार्य करने वाले बच्चों की अधिकतम संख्या 10 वर्ष से 12 वर्ष के बीच की है। इस आयु वर्ग से 40 प्रतिशत बच्चे श्रमिक के रूप में कार्य करते पाये गये।

(171)
2. 8 वर्ष से 10 वर्ष तक की आयु के बच्चे भी ज्यादातर स्थानों पर कार्य करते पाये गये।
इस आयु वर्ग के बच्चे का 30 प्रतिशत भाग श्रमिक के रूप में कार्य कर रहा है।

3. कुल बच्चों का 20 प्रतिशत भाग उस आयु वर्ग से हैं जो 12 वर्ष से 14 वर्ष के बीच का है। शोध कार्य के दौरान चर्चित किये गये 50 बच्चों में से 10 बच्चे इस आयु वर्ग के प्राप्त हुये।

4. शोधार्थी को चर्चित कार्य क्षेत्र में 14 वर्ष से अधिक की उम्र के बच्चे भी श्रमिक के रूप में कार्य करते मिले। इन बच्चों की संख्या मात्र 05 थी जो कुल बाल श्रमिकों का 10 प्रतिशत है।

5. कहा जा सकता है कि बाल श्रमिक के रूप में चर्चित बच्चों का 10 वर्ष से 12 वर्ष तक का आयु वर्ग ऐसा है जो अधिकतम रूप से बाल श्रमिक के रूप में कार्य कर रहा है।

**सारणी – 7.5**

निवास स्थान एवं पारिवारिक आय के आधार पर

<table>
<thead>
<tr>
<th>निवास स्थान</th>
<th>उ. प्र. के निवासी</th>
<th>प्रदेश के बाहर से</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>42</td>
<td>08</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>84</td>
<td>16</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**संख्या 7.5(A) – पारिवारिक आय (प्रतिमाह के आधार पर)**

<table>
<thead>
<tr>
<th>आय</th>
<th>1000 से कम</th>
<th>1000 से 1500</th>
<th>1500 से 2000</th>
<th>2000 से अधिक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>35</td>
<td>10</td>
<td>04</td>
<td>01</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>70</td>
<td>20</td>
<td>08</td>
<td>02</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधार्थी ने बाल श्रमिकों से उनके निवास स्थान एवं पारिवारिक आय के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस आधार पर प्राप्त ऑक्ट्रों को सारणी 2.1 तथा सारणी 2.2 में क्रमशः निवास स्थान तथा पारिवारिक आय के आधार पर प्रस्तुत किया गया। इन सारणीबद्ध ऑक्ट्रों (172)
का विश्लेषण निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

1. बाल श्रमिकों के निवास स्थान को दो भागों में बाँटा गया। एक में उत्तर प्रदेश में निवास करने वाले बाल श्रमिकों को रखा गया। दूसरे में उ. प्र. से बाहर के बाल श्रमिकों को रखा गया।

2. सारणी के आधार पर स्पष्ट है कि बाल श्रमिकों की संख्या में सर्वाधिक संख्या उ. प्र. के निवासी बच्चों की है। कुल बाल श्रमिकों की 84 प्रतिशत संख्या उ. प्र. की निवासी है।

3. उ. प्र. से बाहर के बाल श्रमिकों में चयनित बाल श्रमिकों में मात्र 08 बच्छे ही पाये गये। इन बच्छों में भी 05 बाल श्रमिक बिहार के 02 बाल श्रमिक म. प्र. के तथा 01 बच्चा उत्तराखण्ड की निवासी है।

4. पारिवारिक आय के आधार पर प्राप्त ऑक्स्ड़ को सारणी 2.2 में रखा गया। इससे ज्ञात हुआ कि 1000 रु. से कम आय वाले बच्छों की संख्या सर्वाधिक है। कुल बाल श्रमिकों की संख्या का 70 प्रतिशत श्रमिकों की आय प्रतिमाह 1000 रुपये से कम है।

5. चयनित बाल श्रमिकों में 20 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे परिवार से हैं जिनकी प्रतिमाह पारिवारिक आय 1000 रु. से 1500 रु. के मध्य है।

6. चयनित 50 बाल श्रमिकों में से मात्र 01 बाल श्रमिक परिवार ऐसा है जिसकी प्रतिमाह पारिवारिक आय 2000 रु. से अधिक है। जबकि 04 बाल श्रमिकों की मासिक पारिवारिक आय 1500 रु. से 2000 रु. के बीच की है।

सारणी – 7.6
पढ़ने न जाने के कारण का आधार

<table>
<thead>
<tr>
<th>कारण</th>
<th>घर के काम</th>
<th>फीस नहीं है</th>
<th>पैसा कमाना</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>12</td>
<td>12</td>
<td>26</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>24</td>
<td>24</td>
<td>52</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(173)
शोधार्थी द्वारा बाल श्रमिकों से स्कूल न जाने का कारण पूछकर उसको उत्तर रूप से सारणीबद्ध किया है। बाल श्रमिकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर ज्ञात हुआ कि चयनित बाल श्रमिक घर के काम करने के कारण, फीस न होने के कारण, पैसा कमाने के कारण फंसे नहीं जा पाते। इसको निम्न प्रकार से विशेषित किया गया है –

1. कुल 50 बाल श्रमिकों में से 26 बाल श्रमिक अर्थात 52 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे थे जो पैसा (धन) कमाने के कारण पड़ने नहीं जाते थे।

2. घर के काम करने के कारण और फीस न होने के कारण पड़ने न जा पाने वाले बाल श्रमिकों की संख्या एक समान रही। कुल बाल श्रमिकों का 24–24 प्रतिशत ऐसे बाल श्रमिक थे जो उक्त कारण से पड़ने नहीं जा पा रहे थे।

3. स्पष्ट है कि बाल श्रमिकों के पड़ने न जाने के पीछे मूल भावना धन कमाना रही है।

सारणी – 7.7

जाति, धर्म के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>धर्म</th>
<th>हिन्दू</th>
<th>मुस्लिम</th>
<th>सिख</th>
<th>ईसाई</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>22</td>
<td>27</td>
<td>01</td>
<td>–</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>44</td>
<td>54</td>
<td>02</td>
<td>–</td>
</tr>
<tr>
<td>वर्ग</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>05 (10)</td>
<td>15 (30)</td>
<td>01 (02)</td>
<td>–</td>
</tr>
<tr>
<td>ऑ. बी. सी.</td>
<td>17 (34)</td>
<td>12 (24)</td>
<td>–</td>
<td>–</td>
</tr>
<tr>
<td>एस. सी./एस. टी.</td>
<td>0 (0)</td>
<td>–</td>
<td>–</td>
<td>–</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(कोष्ठक में दी गई संख्या प्रतिशत को व्यक्त करती है)

शोधार्थी ने बाल श्रमिकों के धर्म, जाति, वर्गीकरण भी सारणीबद्ध कर जानने का प्रयास किया कि किस धर्म एवं जाति वर्ग से बाल श्रमिकों का कितना प्रतिशत कार्य कर रहा है। इस प्रश्न के जवाब में प्राप्त ऑक्टर्डों को उत्तर रूप से सारणीबद्ध करके निफर्क निम्न प्रकार हैं –

(174)
1. शोधार्थी ने चयनित बाल श्रमिकों को हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई में वगीकृत किया। इसके आधार पर ज्ञात हुआ कि कुल बच्चों में से बाल श्रमिक ईसाई धर्म से हैं अर्थात् 44 प्रतिशत बाल श्रमिकों की संख्या हिन्दुओं की पाई गई।

2. मुस्लिम धर्म के बाल श्रमिकों की संख्या कुल बाल श्रमिकों की संख्या का 54 प्रतिशत निकली। चयनित 50 बाल श्रमिकों में से 27 बाल श्रमिक मुस्लिम धर्म को मानने वाले थे।

3. बाल श्रमिकों में से एक भी बाल श्रमिक ईसाई धर्म को मानने वाला नहीं था जबकि 01 बाल श्रमिक सिख धर्म का भी मिला।

4. वर्गानुसार - सामान्य, ओ. बी. सी., एस. सी./एस. टी. के आधार पर इन बाल श्रमिकों को अलग-अलग किया गया। इसके आधार पर 21 बच्चे सामान्य वर्ग के पाये गये। इनमें 05 बच्चे हिन्दु, 15 बच्चे मुस्लिम और एक बच्चा सिख निकला।

5. ओ.बी.सी. वर्ग में कार्य करने वाले बाल श्रमिकों की संख्या सर्वाधिक रही। कुल 50 बाल श्रमिकों में से 29 बाल श्रमिक ओ.बी.सी. वर्ग के थे जिनमें से 17 हिन्दू धर्म के और 12 मुस्लिम धर्म के थे। अन्य ने धर्म का कोई भी ओ.बी.सी. बाल श्रमिक नहीं था।

6. चारों वर्गों में से किसी भी धर्म का एक भी बाल श्रमिक एस. सी./एस. टी. नहीं मिला।

7. आंकड़ों से स्पष्ट है कि धर्म के आधार पर कार्य करने वाले बाल श्रमिकों की सर्वाधिक संख्या मुसलमानों की है और वर्ग के आधार पर ओ. बी. सी. के 29 बाल श्रमिक (सर्वाधिक) कुल बाल श्रमिकों का 58 प्रतिशत थे।

सारणी - 7.8
काम के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>काम</th>
<th>होटल में</th>
<th>मिल में</th>
<th>दुकान पर</th>
<th>अन्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>20</td>
<td>20</td>
<td>07</td>
<td>03</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>40</td>
<td>40</td>
<td>14</td>
<td>06</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(175)
काम करने के आधार पर बाल श्रमिकों को सारणीबद्ध कर शोधार्थी ने निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. बाल श्रमिकों की बहुत बड़ी संख्या समान रूप से होटलों एवं मिलों (कारखानों) में काम करती पाई गई। कुल बाल श्रमिकों का 40 प्रतिशत बाल श्रमिक समान रूप से इनकी दो स्थानों पर कार्य कर रहे हैं।

2. होटलों में इन बाल श्रमिकों के द्वारा ग्राहकों को खाना खिलाना, चाय पिलाना अथवा वर्तन धोने का कार्य किया जाता है।

3. किसी भी दुकान पर काम करने वाले बाल श्रमिकों की संख्या 07 थी। ये दुकानें परबून की, मिस्री की और कपड़े बेचने वालों की है। कुल 14 प्रतिशत बाल श्रमिक इस तरह के कार्य में लगे हैं।

4. 50 बाल श्रमिकों में से 03 बाल श्रमिक ऐसे थे जिनका कार्य निर्धःत नहीं था। ये बाल श्रमिक समय और परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने लगते थे।

5. विश्लेषण से स्पष्ट है कि बाल श्रमिकों का 40 प्रतिशत होटलों, ढाबों तथा मिलों-कारखानों में काम करता हैं जबकि 14 प्रतिशत दुकानों पर।

सारिणी – 7.9
कार्य के घंटों के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>कार्य के घंटे</th>
<th>6–9</th>
<th>9–12</th>
<th>12 से अधिक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>03</td>
<td>12</td>
<td>35</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>06</td>
<td>24</td>
<td>70</td>
</tr>
</tbody>
</table>

चयनित बाल श्रमिकों से जब उनके काम करने के घंटों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई तो चौकाने वाले आंकड़े प्राप्त हुए। इनको उक्त रूप से सारणीबद्ध करके निम्न विश्लेषण किया गया –

(176)
1. बाल श्रमिकों में उन श्रमिकों की संख्या सर्वाधिक थी जिनके कार्य के घंटे 12 से अधिक थे। ऐसे बाल श्रमिकों की संख्या 35 थी जो कुल बाल श्रमिकों का 70 प्रतिशत थी।

2. 9 घंटे से 12 घंटे तक कार्य करने वाले बाल श्रमिकों की संख्या 12 थी अर्थात् कुल बाल श्रमिकों का 24 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे थे जिनसे 9 से 12 घंटे तक प्रतिदिन कार्य लिया जाता है।

3. मात्र 03 बाल श्रमिक ऐसे थे जिनसे 6 घंटे से 9 घंटे तक कार्य लिया जाता है।

4. स्पष्ट है कि कार्य करने के घंटों की सीधी बाल श्रमिकों के लामप्रद नहीं है। 70 प्रतिशत बाल श्रमिकों से 12 घंटे से अधिक का कार्य लिया जाना अन्यायी तथा कर्मविरोधी है।

सारिणी — 7:10

भुगतान के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>भुगतान रूपये में</th>
<th>500 से कम</th>
<th>500—1000</th>
<th>1000—1500</th>
<th>1500 से अधिक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>10</td>
<td>20</td>
<td>15</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>20</td>
<td>40</td>
<td>30</td>
<td>10</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधाधीन ने बाल श्रमिकों को प्रतिमाह होने वाले भुगतान के बारे में प्राप्त जानकारी को उक्त रूप में सारणिबद्ध किया और इस आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये —

1. ऐसे बाल श्रमिकों की संख्या सर्वाधिक हैं जिनको प्रतिमाह रू. 500 से रू. 1000 तक का भुगतान किया जाता है। 50 बाल श्रमिकों में से 20 साल श्रमिकों को 500—1000 रू. का भुगतान किया जाता है।

2. सर्वाधिक भुगतान (रू. 1500 से अधिक प्रतिमाह) पाने वाले बाल श्रमिकों की संख्या सबसे कम मात्र 05 अर्थात् 10 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त 10 श्रमिक अर्थात् कुल बाल श्रमिकों का 20 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे थे जिन्हें प्रतिमाह सबसे कम अर्थात् 500 रूपये से कम का भुगतान किया जाता है।

(I77)
3. र. 1000 से र. 1500 तक प्रतिमाह भुगतान पाने वाले श्रमिकों की संख्या 15 रही जो
कुल बाल श्रमिकों का 30 प्रतिशत है।

4. विशेषण से ज्ञात होता है कि बाल श्रमिकों को भुगतान के मामले में भी राहत प्राप्त
नहीं है। मात्र 05 बाल श्रमिकों को 1500 रुपये से अधिक प्राप्त होते है जबकि 10 बाल
श्रमिक तो ऐसे पाये गये जिनको प्रतिमाह र. 500 से कम भुगतान किया जाता है।

सारिणी — 7.11
मालिक के व्यवहार के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>व्यवहार</th>
<th>अच्छा</th>
<th>सामान्य</th>
<th>खराब</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>07</td>
<td>13</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>14</td>
<td>26</td>
<td>60</td>
</tr>
</tbody>
</table>

मालिकों का बाल श्रमिकों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार रहता है, इसको आधार
बनाकर शोधार्थी ने बाल श्रमिकों का वर्गीकरण किया है। इसे संक्षेप में निम्न प्रकार से समझा
जा सकता है —

1. मालिकों का व्यवहार अपने बाल श्रमिकों के प्रति अच्छा नहीं है। प्राप्त ऑक्सीजन से स्पष्ट
होता है कि 50 में से 30 बाल श्रमिकों के मालिकों का व्यवहार खराब है। यह संख्या
कुल बाल श्रमिकों की संख्या का 60 प्रतिशत है।

2. अपने मालिक का व्यवहार अच्छा बताने वाले बाल श्रमिकों की संख्या मात्र 07 रही।
इससे सिद्ध होता है कि मालिक बाल श्रमिकों के प्रति अच्छा बताव नहीं करते हैं। इसी
तरह सामान्य व्यवहार करने वाले मालिकों की संख्या 13 अर्थात् 26 प्रतिशत रही।

3. स्पष्ट है कि बाल श्रमिकों को कार्य के समय मालिकों के (60 प्रतिशत) खराब व्यवहार
का भी सामना करना पड़ता है।
सारिणी – 7.12
बीमार होने पर मालिक का व्यवहार

<table>
<thead>
<tr>
<th>व्यवहार</th>
<th>अच्छा</th>
<th>सामान्य</th>
<th>खराब</th>
<th>पूर्ववर्तमान</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>–</td>
<td>01</td>
<td>15</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>–</td>
<td>02</td>
<td>30</td>
<td>68</td>
</tr>
</tbody>
</table>

बाल अभिकों से उनके मालिकों के व्यवहार में बारे में राय उस स्थिति में ती गई जबकि बाल अभिक बीमार हो जाता है तो आँकड़े उक्त प्रकार प्राप्त हुए। इन आँकड़ों से स्थिति की गम्भीरता का पता चलता है—

1. यह आस्थाभर्यक तथ्य सामने आया कि किसी भी मालिक का व्यवहार बाल अभिक के बीमार हो जाने पर अच्छा नहीं रहा। किसी भी बाल अभिक द्वारा बीमारी की स्थितियों में मालिक का व्यवहार अच्छा नहीं बताया गया।

2. 15 बाल अभिकों (30 प्रतिशत) ने बताया कि उनके बीमार हो जाने पर मालिक का व्यवहार खराब हो जाता है। इसी तरह 34 बाल अभिकों ने अपने बीमार होने पर अपने मालिक का व्यवहार पूर्व की भौति ही बताया।

3. आँकड़े बताते हैं कि बाल अभिकों के बीमार होने के बाद भी 68 प्रतिशत मालिकों का व्यवहार पूर्ववर्तमान रहता है। जबकि एक बाल अभिक ने अपने मालिक के व्यवहार को सामान्य बताया।

सारिणी – 7.13
मनोरंजन के समय के आधार पर

<table>
<thead>
<tr>
<th>मनोरंजन हेतु समय</th>
<th>हैं</th>
<th>नहीं</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>20</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>40</td>
<td>60</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(179)
बाल श्रमिकों को मनोरंजन का समय मिलता है अथवा नहीं, इस बारे में शोधार्थी ने जाना और सारणीबद्ध से ही और नहीं में वर्गीकृत कर दिया। इस आधार पर ज्ञात होता है कि —

1. कुल 50 बाल श्रमिकों में से 30 ने माना कि उनको मनोरंजन का समय नहीं मिलता है। शेष 20 बाल श्रमिकों ने हाँ में इस प्रश्न का जवाब देते हुये स्पष्टकार कि उनको मनोरंजन का समय मिल जाता है।

सारणी — 7.14

मनोरंजन के साधन के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>मनोरंजन के साधन</th>
<th>रेडियो/टेप सुनना</th>
<th>टी. वी. देखना</th>
<th>हॉल में फिल्म देखना</th>
<th>ताश खेलना</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>04</td>
<td>42</td>
<td>02</td>
<td>02</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>08</td>
<td>84</td>
<td>04</td>
<td>04</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधार्थी ने जब सभी बाल श्रमिकों से मनोरंजन के साधनों के बारे में जानना चाहा तो सभी 50 बाल श्रमिकों ने अपनी पसंद अथवा साधनों को स्पष्ट किया। इसमें से 30 बाल श्रमिक भी शामिल रहें जो मनोरंजन के लिये समय मिलने पर नकारात्मक जवाब दे चुके थे। उनके आधार पर चलते—फिरते, काम करते टी. वी. देखना मनोरंजन नहीं है। प्राप्त ऑक्टडों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये —

1. टी. वी. के माध्यम से सर्वाधिक बाल श्रमिक अपना मनोरंजन करते हैं। 50 बाल श्रमिकों में से 42 बाल श्रमिक अर्थात् 84 प्रतिशत बच्चे टी. वी. देखकर अपना मनोरंजन करते हैं।

2. ताश खेलकर और सिनेमा हॉल में फिल्म देखकर मनोरंजन करने वालों की संख्या समान रूप से 02 निकली। इसी के साथ रेडियो पर, टेप आदि को मनोरंजन का साधन मानने वाले बाल श्रमिकों की संख्या 04 रही।

(180)
3. ऑकड़ों के आधार पर यह निश्चय आसानी से निकाला जा सकता है कि बाल श्रमिक अपने मनोरंजन का साधन या आयक से टी. वि. को स्वीकारते हैं और इसी के द्वारा अपना मनोरंजन भी करते हैं।

सारिणी – 7.15
अपने साधियों के प्रति स्वयं का व्यवहार

<table>
<thead>
<tr>
<th>व्यवहार</th>
<th>अच्छा</th>
<th>सामान्य</th>
<th>खराब</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>42</td>
<td>08</td>
<td>–</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>84</td>
<td>16</td>
<td>–</td>
</tr>
</tbody>
</table>

बाल श्रमिकों से जब इस बिन्दु पर राय मौके गई कि उनका स्वयं का व्यवहार अपने साधियों के प्रति किस प्रकार का रहता है तो लगभग सभी ने अपने व्यवहार को अच्छा बताया। वर्गीकृत ऑकड़ों को निम्न रूप से समझा जा सकता है –

1. चयनित बाल श्रमिकों में से 42 बाल श्रमिकों अर्थात 84 प्रतिशत ने अपना व्यवहार अपने साधियों के प्रति अच्छा बताया।

2. मात्र 08 बाल श्रमिकों ने अपने साधियों के प्रति स्वयं के व्यवहार को खराब बताया।

सारिणी – 7.16
धूमपान के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>धूमपान</th>
<th>हैं</th>
<th>नहीं</th>
<th>कभी नहीं</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>18</td>
<td>21</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>36</td>
<td>42</td>
<td>22</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधार्थी ने बाल श्रमिकों द्वारा अपनाई जानेवाली नर्स की आदतों के बारे में विविध बिन्दुओं के आधार पर राय प्राप्त की। इसमें बाल श्रमिकों के धूमपान करने, शराब पीने, भोग अथवा अन्य नशा करने को शामिल किया गया। बाल श्रमिकों से क्रमशः एक-एक बिन्दु पर ऑकड़ों को प्राप्त कर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये –

(181)
1. बाल श्रमिकों में से ज्यादातर धूम्रपान नहीं करने वाले निकले। कुल 50 बाल श्रमिकों में से 21 बाल श्रमिक ऐसे रहे जिन्होंने धूम्रपान न करने की बात स्वीकारी।

2. धूम्रपान करने वालों की संख्या धूम्रपान न करने वालों से धोड़ी सी ही कम रही। 18 बाल श्रमिक ऐसे रहे जिन्होंने धूम्रपान करना स्वीकारा।

3. 11 बाल श्रमिक ऐसे भी थे जिन्होंने कभी-कभी धूम्रपान करने की बात स्वीकारी।

4. निष्कर्ष: ऐसा कहा जा सकता है कि धूम्रपान करने वाले बाल श्रमिकों की संख्या धूम्रपान न करने वालों से अधिक रही। नियमित और कभी-कभी धूम्रपान करने के आधार पर इन बाल श्रमिकों की संख्या 32 रही जो कुल बाल श्रमिकों का 64 प्रतिशत है।

सारांश – 7.17
शराब पीने के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>शराब पीना</th>
<th>हैं</th>
<th>नहीं</th>
<th>कभी नहीं</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>09</td>
<td>34</td>
<td>07</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>18</td>
<td>68</td>
<td>14</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शोधार्थी द्वारा बाल श्रमिकों से शराब पीने को लेकर पूरा प्रसन्न के आकड़े उक्त सारांश में प्रदर्शित हैं। इसके आधार पर निम्न निष्कर्ष दिये जा सकते हैं –

1. शराब नहीं पीने वालों की संख्या नियमित रूप से और कभी-कभी शराब पीने वालों से अधिक रही। कुल 50 बाल श्रमिकों में से 34 (68 प्रतिशत) बाल श्रमिक ऐसे थे जो शराब नहीं पीते थे।

2. शराब पीने वालों में 09 बाल श्रमिक और कभी-कभी शराब पीने वालों में 07 बाल श्रमिक शामिल थे।
सारिणी – 7.19
काम छोड़ने की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>काम छोड़ने की स्थिति</th>
<th>हाँ</th>
<th>नहीं</th>
<th>यदि अच्छा काम मिले</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>16</td>
<td>17</td>
<td>07</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>32</td>
<td>34</td>
<td>14</td>
</tr>
</tbody>
</table>

बाल श्रमिकों से जब उनके द्वारा वर्तमान में किये जा रहे कार्य को छोड़ने सम्बन्धी बिन्दु पर राय माँगी गई तो कार्य को छोड़ने वाले और कार्य को नहीं छोड़ने वालों की संख्या लगभग एक समान रही। प्राप्त आँकड़ों को सारणीबद्ध कर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए गये थे –

1. वर्तमान काम को छोड़ने वाले बाल श्रमिकों की संख्या 16 रही। इसी के साथ-साथ ऐसे बाल श्रमिक भी थे जो वर्तमान कार्य को उस स्थिति में छोड़ना चाहते थे जबकि वर्तमान कार्य से बेहतर कार्य उन्हें मिल सके। ऐसे बाल श्रमिकों की संख्या 07 रही।

2. कुल 17 बाल श्रमिक इस तरह के थे जो अपना वर्तमान कार्य नहीं छोड़ना चाहते थे।

3. संक्षेप में निष्कर्ष का अवलोकन करने तो ज्ञात होगा कि काम छोड़ने वाले श्रमिकों की संख्या काम नहीं छोड़ने वालों से अपेक्षाकृत अधिक है। 17 काम नहीं छोड़ने वाले बाल श्रमिकों के मुकाबले काम छोड़ने वालों की संख्या 23 (16 + 07) है।

सारिणी – 7.20
पढ़ाई के सम्बन्ध में

<table>
<thead>
<tr>
<th>पढ़ाई चाहते हैं</th>
<th>हाँ</th>
<th>नहीं</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>09</td>
<td>41</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रतिशत</td>
<td>18</td>
<td>82</td>
</tr>
</tbody>
</table>

बाल श्रमिक अपनी पढ़ाई को लेकर सजग और विचित्र नहीं दिखाई। पढ़ने के सम्बन्ध में पूछने पर प्राप्त आँकड़ों से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये –

(184)